21 / 01 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संगम पर बाप और ब्राह्मण के साथ साथ होने की अनुभूति

➢➢ मैं आत्मा संगमयुगी ब्राह्मण हूँ।

➳ _ ➳ बेहद के सेवा के निमित्त बनाने वाले बापदादा के साथ साथ हूँ।

→ बापदादा की फ्रेंड हूँ।

→ मैं बापदादा की राइट हैंड हूँ।

→ बापदादा से हैंडशेक कर रही हूँ।

■ मैं बहुत खुश हूँ।

➳ _ ➳ मैं अपने सच्चे साजन की सजनी बन गयी हूँ।

→ बाबा ने मुझे विश्व के सेवा के कार्य के निमित्त बनाया है।

→ मैं सबसे नजदीक से नज़दीक गॉड की फ्रेंड हूँ।

→ अति समीप फ्रेंड हूँ।

→ क्योंकि समान कर्तव्य पर हूँ।

■ जैसे बाप बेहद की सेवा प्रति है...

■ वैसे ही मैं भी बेहद की सेवाधारी हूँ।

➢➢ बापदादा खास मेरे लिए आये है, मुझसे मिल रहे है।

➳ _ ➳ मैं बापदादा की प्रिय फ्रेंड बन गयी हूँ क्योंकि छोटे होते भी जिम्मेदारी बड़ी ली है।

→ मैं बाप की सदा की साथी हूँ।

■ सदा साथ साथ हूँ।

➳ _ ➳ मैं बाप के साथ कंबाइंड हूँ।

→ मैं कभी भी अलग नही होने वाली रूहानी युगल स्वरूप हूँ।

■ संगमयुग पर मैं अनादि कंबाइंड स्वरूप बन गयी हूँ।

➢➢ जब तक संगमयुग है मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा बाप के साथ साथ हूँ।

➳ _ ➳ मैं श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ ब्राह्मण हूँ।

→ मैं मास्टर शिक्षक बन दिल व जान, सिक व प्रेम से दिन रात सेवा करने वाली सच्ची सेवक हूँ।

→ मैं बाप की विशेष में विशेष और विशेष में भी विशेष बच्ची हूँ।

■ मैं बाप के नयनो की नूर हूँ।

■ मस्तक की मणि हूँ।

■ गले के विजय माला की मणका हूँ।

■ बाप के होठों की मुस्कान हूँ।